eISSN 3049-2610
Research Stream
A Bi-Annual, Open Access Pear Reviewed International Journal
Volume 03, Issue 01, March 2026

विकसित भारत के सांस्कृतिक उत्कर्ष में संगीत की भूमिका

डॉ0 प्रतिमा गुप्ता[1]
[1]असिस्टेन्ट प्रोफसर संगीत गायन, दीनानाथ पाण्डेय राजकीय महिला स्नात0 महाविद्यालय, देवरिया उ0प्र0

Received: 20 March 2026 Accepted & Reviewed: 25 March 2026, Published: 31 March 2026

Abstract

भारत का सपना है वर्ष 2047 तक विकसित राष्ट्र बनना। यह वर्ष केवल स्वतंत्रता के 100 वर्ष पूरे होने का प्रतीक ही नहीं बल्कि उस नए भारत का प्रतीक होगा जो आत्मनिर्भर, नवाचार, समावेशी और सांस्कृतिक रूप से सशक्त, समृद्ध और शक्तिशाली होगा। जब विकसित भारत की बात करते है जो उसमें केवल आर्थिक प्रगति ही नही बल्कि सांस्कृतिक विकास और मानवीय मूल्यों का उत्थान भी शामिल है। भारत की पहचान है – हमारी संस्कृति। या यूं कहे कि भारत की आत्मा उसकी संस्कृति में बसती है और उस संस्कृति का सबसे मधुर, जीवंत और प्रभावी माध्यम है – संगीत। संगीत भारत के आध्यात्मिक और सामाजिक जीवन में प्राचीन काल से ही गहराई से जुड़ा हुआ है। संगीत केवल मनोरंजन का साधन ही नहीं यह आध्यात्मिक, राष्ट्रीय एकता, सामाजिक समरसता और मानवीय संवेदनाओं का अद्भूत संगम है। 2047 जक विकसित भारत की परिकल्पना तभी साकार होगी जब भारत अपनी सांस्कृतिक आतमा को जीवंत रखेगा। आर्थिक विकार और तकनीकि उन्नति सार्थक होगें जब वे भारतीय संस्कृति और संगीत के मानवीय मूल्यों के साथ जुड़े। इस दृष्टि से यह आवश्यक है कि हम अपनी सांस्कृतिक जड़ों को मजबूत करें और उनमें आधुनिकता का समुचित संतुलन स्थापित करें।

बीज शब्द :– संगीत, सांस्कृतिक, नवाचार, विकसित भारत, 2047, आत्मनिर्भर, उत्कर्ष।

Introduction

भारत की संगीत परम्परा विश्व की सबसें प्राचीन परम्पराओं में से एक है। भारत की संगीत परम्परा हजारों वर्ष पुरानी है। वैदिक काल से लेकर आधुनिक काल तक संगीत ने न केवल धार्मिक व आध्यात्मिक जीवन को बल्कि सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक जीवन को भी गहराई से प्रभावित किया है।

वैदिक काल से मध्य काल– सामवेद को भारतीय संगीत का सबसे प्राचीन स्रोत माना जाता है। इसमें वेद मंत्रों को गाकर प्रस्तुत किया जाता था। भरत मुनि का नाट्यशास्त्र–संगीत को नाट्यकलाा से जोड़कर उसकी वैज्ञानिक व्याख्या की। गुप्तकाल को भी भारतीय संगीत का स्वर्ण युग कहा जा सकता है। तब संगीत राजदरबारों, मंदिरों और लोकजीवन में समान रूप से फला–फूला। वीणा, मृदंग और बांसुरी जैसे वाद्ययन्त्रों का विकास इसी समय हुआ। मध्यकाल में भक्ति आंदोलन ने संगीत को जन–जन तक पहुॅचा दिया। तुलसीदास, कबीरदास, सूरदास, मीराबाई, नामदेव, चैतन्य प्रभु आदि संतों ने संगीत को भक्ति और सामाजिक सुधार का माध्यम बनाया।

सूफी संगीत और लोक संगीत– सूफ़ी दरवेशों में ''कव्वाली'' और सूमां जैसी परम्पराएं दीं, जो धार्मिक सीमाओं से ऊपर उठकर मानवता का संदेश देती हैं। यह वह दौर था जब संगीत ने हिन्दू और सुस्लिम परम्पराओं के बीच सांस्कृतिक सेतु का कार्य किया।

eISSN 3049-2610
Research Stream
A Bi-Annual, Open Access Pear Reviewed International Journal
Volume 03, Issue 01, March 2026

भारत का लोक संगीत हर क्षेत्र की मिट्टी और संस्कृति से जुड़ा है। भारत के हर प्रदेश का लोक संगीत चाहे वह राजस्थानी मांड हो, भोजपुरी बिरहा, पंजाबी गिद्धा या असमिया बिहू– लोगों की जीवन गाथा का दर्पण है। ये सभी भारत की विविधता की एकता की पहचान है।

आधुनिक युग और स्वतंत्रता संग्राम– ब्रिटिश काल में पश्चिमी संगीत का प्रभाव भारत पर पड़ा, परन्तु भारतीय संगीत अपनी आत्मा नहीं खोई। स्वतंत्रता आन्दोलन के समय ''वन्दे मातरम्'' जन गण मन और ''सारे जहाँ से अच्छा'' जैसे गीतों ने लाखों देशवासियों में देशभक्ति का संचार किया। महात्मा गांधी ने ''भजन''को सत्याग्रह और आत्मबल का माध्यम बनाया।

इस प्रकार संगीत भारत के स्वाधीनता से स्वाभिमान तक की यात्रा का अभिन्न अंग रहा।

आधुनिक भारत में संगीत वर्तमान की स्थिति – आज का भारत एक विशाल और विविधतापूर्ण संगीत संस्कृति का धनी देश है। यहाँ संगीत केवल पारंपरिक रूपों तक सीमित नहीं रहा, बल्कि आधुनिक तकनीक और वैश्विक मंचों के माध्यम से इसकी पहुचँ हर व्यक्ति तक हो गई है।

भारतीय संगीत उद्योग का आकार 2025 में लगभग 2500 करोड़ से अधिक का हो चुका है और यह वैश्विक स्तर पर अपनी पहचान बना चुका है। Spotify, Youtube, JioSavan और Apple Music जैसी डिजीटल सेवाओं ने कलाकारों को सीधा मंच प्रदान कर रहा है। जहाँ बालीवुड गीतों ने जनसंगीत का रूप लिया, वहीं स्वतंत्र कलाकारों ने अपने मौलिक गीतों से नई पहचान बनाई। प्रतिक, ऋतविज, ए आर रहमान और शंकर–एहसान– लायॅ, सलीम–सुलेमान आदि जैसे कलाकारों ने संगीत को नए आयाम दिए हैं।

आज हर कोई अपने मोबाइल, टैबलेट से संगीत बना रहा और साझा कर रहा है। यही लोकतंत्रीकरण, ''संगीत का समाजीकरण'' है जिससे नई प्रतिभाएँ ग्रामीण और कस्बा क्षेत्रों से भी सामने आ रही है।

संगीत हमेशा से समाज का दर्पण रहा है। बदलते युग में यह सामाजिक सुधार और एकता का सबसे सशक्त माध्यम बन गया है। यह सामाजिक संदेशों का माध्यम जैसे पर्यावरण शिक्षा, महिला सशक्तिकरण, स्वच्छता और नशामुक्ति, 'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओं' आदि जैसे अभियानों में संगीत का प्रयोग लगातार बढ़ रहा है। आज की युवा पीढ़ी संगीत के माध्यम से अपने विचार व्यक्त करती है। रैप, हिप–हाप, फ्यूजन, रिमिक्स आदि संगीत के माध्यम से सामाजिक मुद्दों जैसे– भ्रष्टाचार, पर्यावरण, असमानता, विभिन्न तरह की जागरूकता, मतदान जागरूकता आदि पर ध्यान आकर्षित किया है।

चिकित्सा के क्षेत्र में भी संगीत का विशेष योगदान रहा है। म्यूजिक थेरेपी का उपयोग कर चिंता, अवसाद और अनिद्रा जैसी समस्याओं के उपचार में किया जा रहा है। प्राचीन काल से ही संगीत द्वारा उपचार किया जाता रहा है। वर्तमान में AIIMS आदि संस्थानों द्वारा म्यूजिक थेरेपी पर शोध कार्य किया जा रहा है।

विकसित भारत 2047 की दिशा में सगीत योगदान :– अंतरराष्ट्रीय मंच पर योग, ध्यान, बॉलीवुड और भारतीय संगीत पहले से ही विश्व मंचों पर लोकप्रिय है। विकसित भारत @ 2047 केवल आर्थिक वृद्धि का लक्ष्य नहीं है, बल्कि यह सांस्कृतिक उत्कर्ष का भी संकल्प है। संगीत इस परिर्वतन में कई स्तरों पर भूमिका

eISSN 3049-2610
Research Stream
A Bi-Annual, Open Access Pear Reviewed International Journal
Volume 03, Issue 01, March 2026

निभा सकता है। भारत की विविधता को जोड़ने वाला सबसे सुन्दर सूत्र संगीत है। चाहे दक्षिण भारत का कर्नाटक संगीत हो या उत्तर भारत का हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत – दोनों में एकता के स्वर गूँजते हैं। AI, ChatGpt, जैसी तकनीकें संगीत निर्माण और प्रस्तुति में नए अवसर खोल रही है। 2047 तक भारत में AI संचालित संगीत शिक्षा मंच, डिजिटल कॉन्सर्ट्स और वर्चुअल म्यूजिक फेस्टिवल ये सभी सामान्य बात बन गई।

2047 तक भारत ''सॉफ्ट पावर'' के संगीत को राजनयिक माध्यम बना सकता है। भारत सरकार ने संस्कृति और संगीत को प्रोत्साहित करने के कई कदम उठाए हैं– राष्ट्रीय संस्कृति निधि, संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार, 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' कार्यक्रम के अन्तर्गत स्तरीय सांस्कृतिक आदान–प्रदान, कला सम्पदा, डिजिटल आर्काइव्स, जो भारतीय संगीत की धरोहर को संरक्षित कर रहे हैं। जिससे 2047 तक भारत म्यूजिक एक्सपोर्ट हब के रूप में विश्व बाजार में अग्रहणी बन सकता है।

2047 तक भारत का संगीत ऐसा होगा जहाँ शिव तांडव स्तोत्र और AI बीट्स एक ही मंच पर सहआस्तित्व में होंगे। भारतीय रागों का उपयोग AI और EDM (Electronic Dance Music) के साथ किया जाएगा।

भारत का संगीत ''वसुधैव कुटुम्बकम'' की भावना का प्रतिनिधित्व करता है। योग, आयुर्वेद और संगीत– ये तीन स्तंम्भ विश्व में भारत की पहचान को सुद्ढ़ करेंगें।

निष्कर्षः– संगीत केवल ध्वनि नहीं हैं– यह आत्मा की भाषा है। वर्ष 2047 तक भारत को यदि विकसित राष्ट्र बनना है, तो आर्थिक, तकनीकि और सामाजिक प्रगति के साथ–साथ सांस्कृतिक विकास भी उतना ही आवश्यक है। संगीत उस सांस्कृतिक उत्कर्ष की धड़कन है जो एकता शांति और समरसता की दिशा में ले जाता है। जब हर भारतीय के ह्रदय में संगीत के स्वर गूँजेगें– तब विकसित भारत केवल एक नारा नहीं, बल्कि एक जीवंत यर्थाथ होगा। जहाँ सुर और ताल में लय मिलें, वहीं भारत की आत्मा झंकारती है। विकसित भारत @ 2047–एक ऐसा भारत जहाँ विकास और संस्कृति साथ–साथ गूँजे।

सन्दर्भ सूचीः–

1. सिंह, डॉ0 जयदेव ठाकुर, भारतीय संगीत का इतिहास, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, पेज न0 37।
2. कुमार, संतोष, सम्पा0 शिल्पायन संगीत लेख माला, पिल्ग्रिम्स पब्लिशिंग वाराणसी, पेज न0 123।
3. जैन, डॉ0 शान्ति, लोकगीतों के संदर्भ और आयाम, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, पेज न0 02।

———